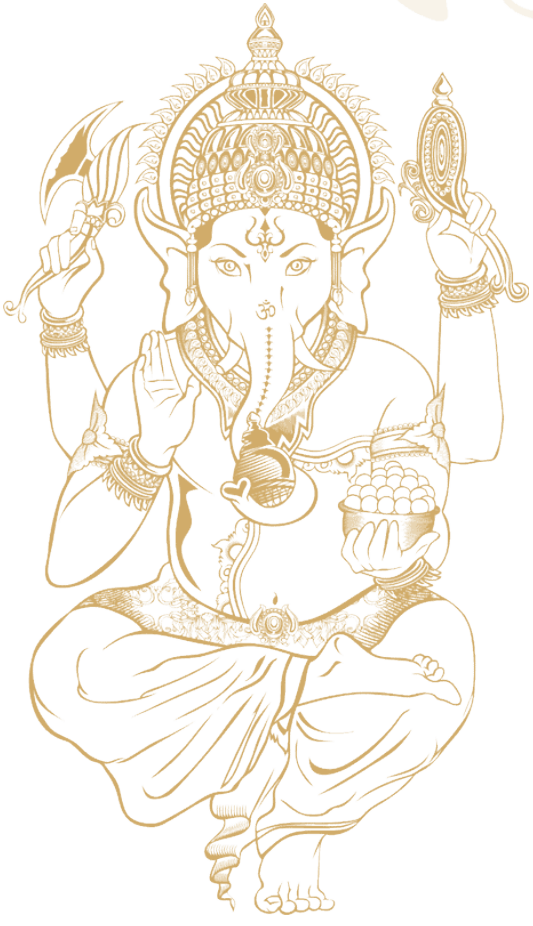

# Shilpa

23 Aug 1994

05:30 AM

Nadia

Model: Web-MyKundli

Order No: 121790001

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | स्त्रीलिंग |
| **जन्म तिथि** | **23/08/1994** |
| दिन | मंगलवार |
| **जन्म समय** | **05:30:00 घंटे** |
| इष्ट | 00:42:23 घटी |
| **स्थान** | **Nadia** |
| राज्य | West Bengal |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 23:24:00 उत्तर |
| रेखांश | 88:56:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | 00:25:44 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 05:55:44 घंटे |
| वेलान्तर | -00:02:44 घंटे |
| साम्पातिक काल | 03:59:57 घंटे |
| सूर्योदय | 05:13:02 घंटे |
| सूर्यास्त | 18:00:28 घंटे |
| दिनमान | 12:47:25 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | दक्षिणायन |
| सूर्य स्थिति(गोल) | उत्तर |
| ऋतु | वर्षा |
| सूर्य के अंश | 05:51:49 सिंह |
| लग्न के अंश | 08:51:30 सिंह |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न-लग्नाधिपति | सिंह - सूर्य |
| **राशि-स्वामी** | **कुम्भ - शनि** |
| **नक्षत्र-चरण** | **पू०भाद्रपद - 2** |
| नक्षत्र स्वामी | गुरु |
| योग | सुकर्मा |
| करण | गर |
| गण | मनुष्य |
| योनि | सिंह |
| नाड़ी | आद्य |
| वर्ण | शूद्र |
| वश्य | मानव |
| वर्ग | मेष |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | वायु |
| जन्म नामाक्षर | सो-सौम्या |
| पाया(राशि-नक्षत्र) | ताम्र - लौह |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | सिंह |

# पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1916 | भाद्रपद | 1 |
| पंजाबी | संवत : 2051 | भाद्रपद | 8 |
| बंगाली | सन् : 1401 | भाद्रपद | 6 |
| तमिल | संवत : 2051 | आवनी | 7 |
| केरल | कोल्लम : 1170 | चिगंम | 7 |
| नेपाली | संवत : 2051 | भाद्रपद | 7 |
| चैत्रादि | संवत : 2051 | भाद्रपद | कृष्ण 2 |
| कार्तिकादि | संवत : 2051 | श्रावण | कृष्ण 2 |

## पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 12:46:07
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 18:51:33 घंटे
जन्म योग _____: पू०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____: सुकर्मा
योग समाप्ति काल _____: 07:29:46 घंटे
जन्म योग _____: सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____: गर
करण समाप्ति काल _____: 12:46:07 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 29:55:02
भभोग _____: 63:18:54
भोग्य दशा काल _____: गुरु 8 वर्ष 4 मा 21 दि

## घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: श्वान
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

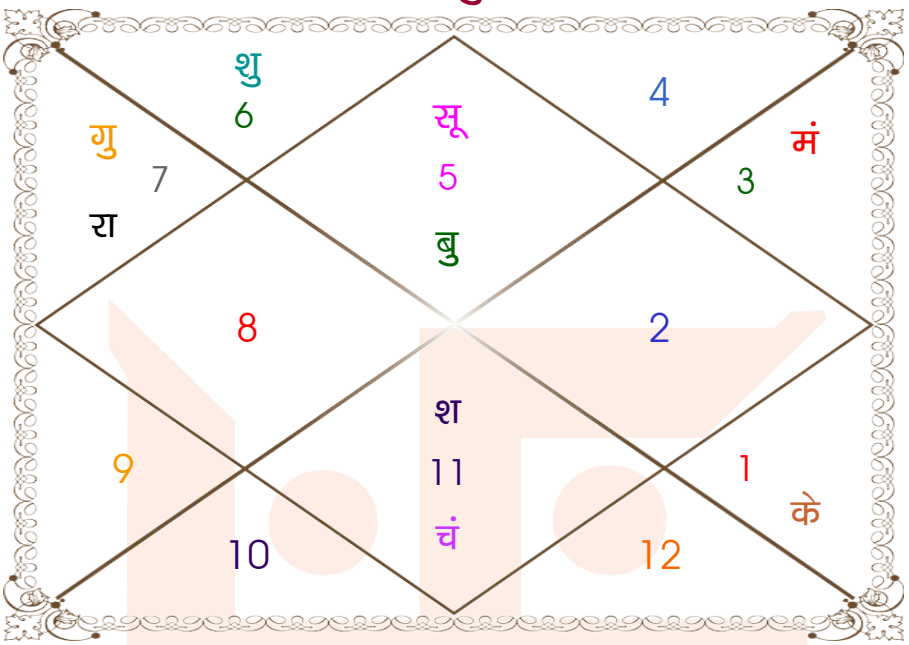


## चन्द्र कुंडली

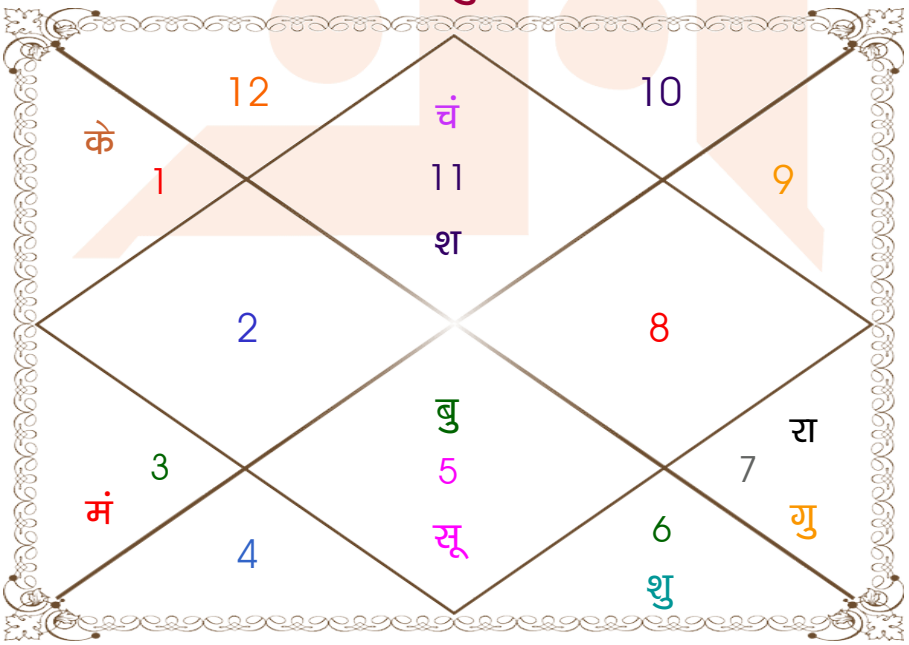


**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

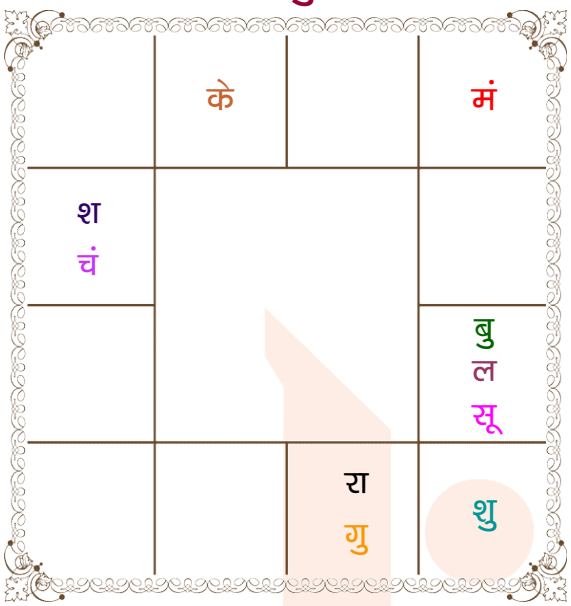


## लग्न कुंडली

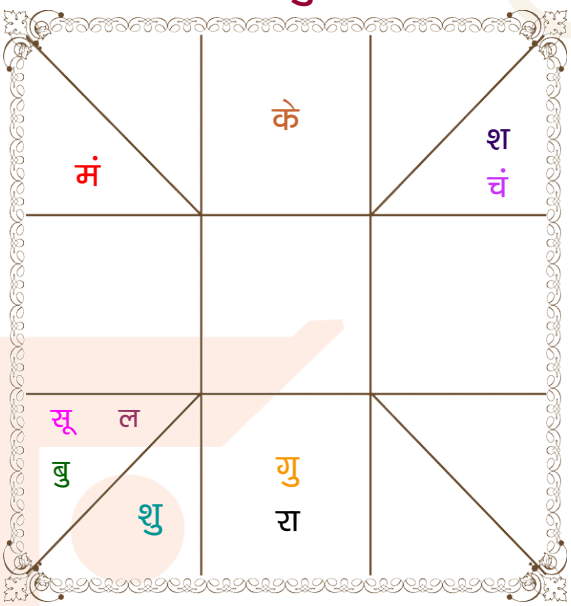


## विंशोत्तरी
## गुरु 8वर्ष 4मा 21दि

**गुरु**

**23/08/1994**

**14/01/2107**

| | |
|---|---|
| गुरु | 13/01/2003 |
| शनि | 13/01/2022 |
| बुध | 13/01/2039 |
| केतु | 13/01/2046 |
| शुक्र | 13/01/2066 |
| सूर्य | 14/01/2072 |
| चन्द्र | 13/01/2082 |
| मंगल | 13/01/2089 |
| राहु | 14/01/2107 |

## योगिनी
## भ्रामरी 2वर्ष 1मा 5दि

**धान्या**

**27/09/2025**

**27/09/2028**

| | |
|---|---|
| धान्या | 28/12/2025 |
| भ्रामरी | 28/04/2026 |
| भद्रिका | 28/09/2026 |
| उल्का | 29/03/2027 |
| सिद्धा | 28/10/2027 |
| संकटा | 28/06/2028 |
| मंगला | 28/07/2028 |
| पिंगला | 27/09/2028 |

**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | सिंह | 08:51:30 | 325:06:10 | मघा | 3 | 10 | सूर्य | केतु | गुरु | --- |
| सूर्य | | | सिंह | 05:51:49 | 00:57:48 | मघा | 2 | 10 | सूर्य | केतु | राहु | मूलत्रिकोण |
| चंद्र | | | कुंभ | 26:20:21 | 12:38:34 | पू०भाद्रपद | 2 | 25 | शनि | गुरु | केतु | सम राशि |
| मंगल | | | मिथु | 10:14:39 | 00:38:45 | आर्द्रा | 2 | 6 | बुध | राहु | गुरु | शत्रु राशि |
| बुध | | अ | सिंह | 15:34:08 | 01:49:33 | पू०फाल्गुनी | 1 | 11 | सूर्य | शुक्र | सूर्य | मित्र राशि |
| गुरु | | | तुला | 14:43:24 | 00:08:06 | स्वाति | 3 | 15 | शुक्र | राहु | केतु | शत्रु राशि |
| शुक्र | | | कन्या | 21:52:00 | 00:58:26 | हस्त | 4 | 13 | बुध | चंद्र | शुक्र | नीच राशि |
| शनि | व | | कुंभ | 15:57:27 | 00:04:28 | शतभिषा | 3 | 24 | शनि | राहु | शुक्र | मूलत्रिकोण |
| राहु | व | | तुला | 24:14:54 | 00:10:21 | विशाखा | 2 | 16 | शुक्र | गुरु | बुध | मित्र राशि |
| केतु | व | | मेष | 24:14:54 | 00:10:21 | भरणी | 4 | 2 | मंगल | शुक्र | बुध | मित्र राशि |
| हर्ष | व | | धनु | 29:13:52 | 00:01:46 | उत्तराषाढ़ा | 1 | 21 | गुरु | सूर्य | राहु | --- |
| नेप | व | | धनु | 27:12:44 | 00:01:10 | उत्तराषाढ़ा | 1 | 21 | गुरु | सूर्य | सूर्य | --- |
| प्लूटो | | | वृश्चि | 01:34:33 | 00:00:35 | विशाखा | 4 | 16 | मंगल | गुरु | राहु | --- |
| दशम भाव | | | वृष | 08:17:49 | -- | कृतिका | -- | 3 | शुक्र | सूर्य | शुक्र | -- |

व - वक्री  स - स्थिर
अ - अस्त  पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:47:10

## लग्न-चलित

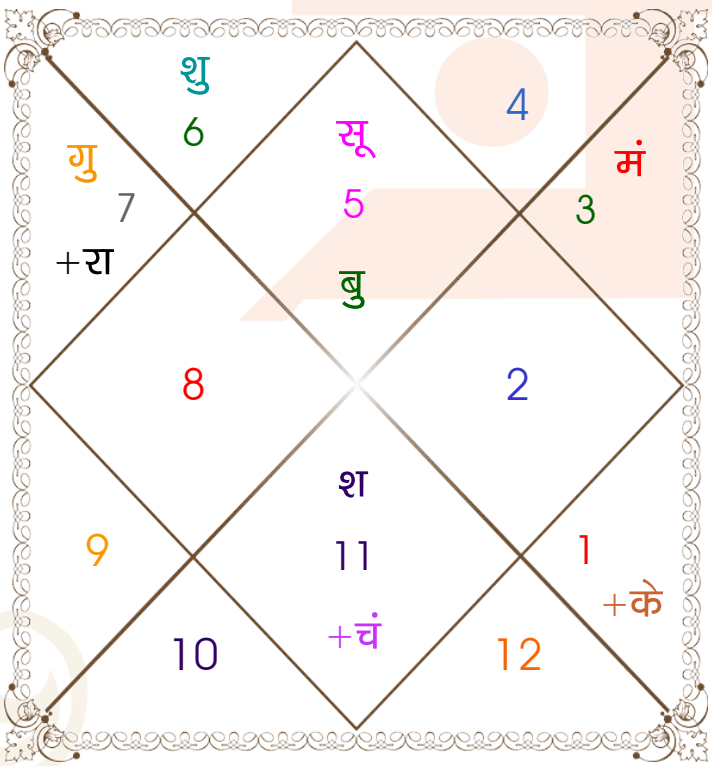


## चन्द्र कुंडली

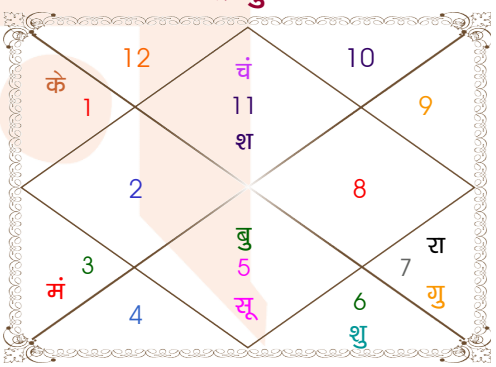


## नवमांश कुंडली

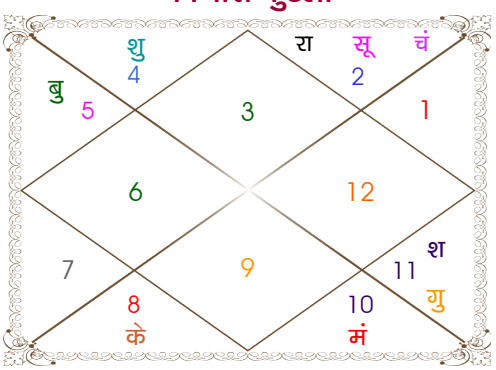


**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कर्क | 23:45:53 | सिंह | 08:51:30 |
| 2 | सिंह | 23:45:53 | कन्या | 08:40:16 |
| 3 | कन्या | 23:34:39 | तुला | 08:29:03 |
| 4 | तुला | 23:23:26 | वृश्चिक | 08:17:49 |
| 5 | वृश्चिक | 23:23:26 | धनु | 08:29:03 |
| 6 | धनु | 23:34:39 | मकर | 08:40:16 |
| 7 | मकर | 23:45:53 | कुम्भ | 08:51:30 |
| 8 | कुम्भ | 23:45:53 | मीन | 08:40:16 |
| 9 | मीन | 23:34:39 | मेष | 08:29:03 |
| 10 | मेष | 23:23:26 | वृष | 08:17:49 |
| 11 | वृष | 23:23:26 | मिथुन | 08:29:03 |
| 12 | मिथुन | 23:34:39 | कर्क | 08:40:16 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | सिंह | 08:51:30 |
| 2 | कन्या | 06:12:25 |
| 3 | तुला | 06:36:49 |
| 4 | वृश्चिक | 08:17:49 |
| 5 | धनु | 09:30:32 |
| 6 | मकर | 09:43:56 |
| 7 | कुम्भ | 08:51:30 |
| 8 | मीन | 06:12:25 |
| 9 | मेष | 06:36:49 |
| 10 | वृष | 08:17:49 |
| 11 | मिथुन | 09:30:32 |
| 12 | कर्क | 09:43:56 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा |
| पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति |
| विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा |

## चलित कुंडली

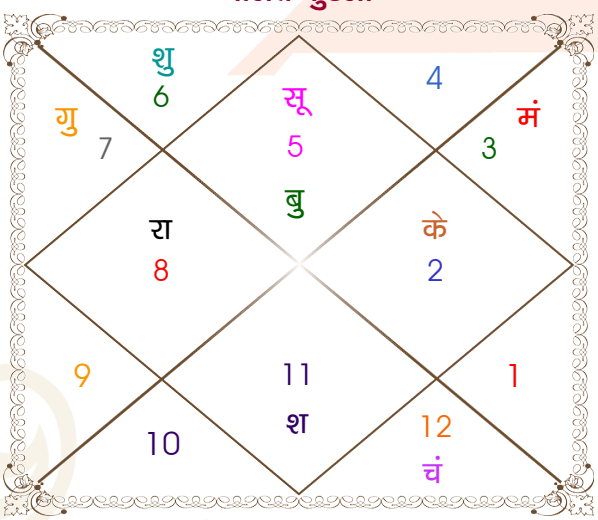


## भाव कुंडली

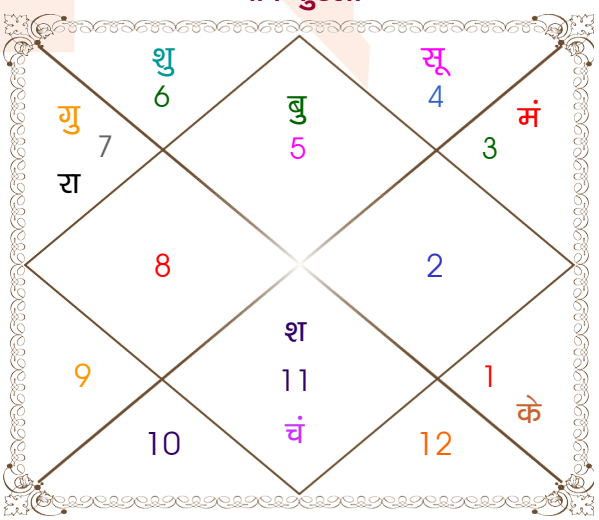


**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : गुरु 8 वर्ष 4 मास 21 दिन

| गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23/08/1994 | | 13/01/2003 | | 13/01/2022 | | 13/01/2039 | | 13/01/2046 | |
| 13/01/2003 | | 13/01/2022 | | 13/01/2039 | | 13/01/2046 | | 13/01/2066 | |
| | 00/00/0000 | शनि | 16/01/2006 | बुध | 11/06/2024 | केतु | 11/06/2039 | शुक्र | 15/05/2049 |
| | 00/00/0000 | बुध | 25/09/2008 | केतु | 08/06/2025 | शुक्र | 11/08/2040 | सूर्य | 15/05/2050 |
| | 23/08/1994 | केतु | 04/11/2009 | शुक्र | 08/04/2028 | सूर्य | 16/12/2040 | चंद्र | 14/01/2052 |
| केतु | 26/11/1994 | शुक्र | 04/01/2013 | सूर्य | 12/02/2029 | चंद्र | 17/07/2041 | मंगल | 15/03/2053 |
| शुक्र | 27/07/1997 | सूर्य | 17/12/2013 | चंद्र | 15/07/2030 | मंगल | 14/12/2041 | राहु | 14/03/2056 |
| सूर्य | 15/05/1998 | चंद्र | 18/07/2015 | मंगल | 12/07/2031 | राहु | 01/01/2043 | गुरु | 13/11/2058 |
| चंद्र | 14/09/1999 | मंगल | 26/08/2016 | राहु | 28/01/2034 | गुरु | 08/12/2043 | शनि | 13/01/2062 |
| मंगल | 20/08/2000 | राहु | 03/07/2019 | गुरु | 05/05/2036 | शनि | 16/01/2045 | बुध | 13/11/2064 |
| राहु | 13/01/2003 | गुरु | 13/01/2022 | शनि | 13/01/2039 | बुध | 13/01/2046 | केतु | 13/01/2066 |

| सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13/01/2066 | | 14/01/2072 | | 13/01/2082 | | 13/01/2089 | | 14/01/2107 | |
| 14/01/2072 | | 13/01/2082 | | 13/01/2089 | | 14/01/2107 | | 00/00/0000 | |
| सूर्य | 03/05/2066 | चंद्र | 13/11/2072 | मंगल | 11/06/2082 | राहु | 26/09/2091 | गुरु | 03/03/2109 |
| चंद्र | 01/11/2066 | मंगल | 14/06/2073 | राहु | 30/06/2083 | गुरु | 19/02/2094 | शनि | 15/09/2111 |
| मंगल | 09/03/2067 | राहु | 14/12/2074 | गुरु | 05/06/2084 | शनि | 26/12/2096 | बुध | 21/12/2113 |
| राहु | 01/02/2068 | गुरु | 14/04/2076 | शनि | 14/07/2085 | बुध | 15/07/2099 | केतु | 24/08/2114 |
| गुरु | 19/11/2068 | शनि | 13/11/2077 | बुध | 12/07/2086 | केतु | 02/08/2100 | | 00/00/0000 |
| शनि | 01/11/2069 | बुध | 15/04/2079 | केतु | 08/12/2086 | शुक्र | 03/08/2103 | | 00/00/0000 |
| बुध | 07/09/2070 | केतु | 14/11/2079 | शुक्र | 07/02/2088 | सूर्य | 27/06/2104 | | 00/00/0000 |
| केतु | 13/01/2071 | शुक्र | 14/07/2081 | सूर्य | 14/06/2088 | चंद्र | 27/12/2105 | | 00/00/0000 |
| शुक्र | 14/01/2072 | सूर्य | 13/01/2082 | चंद्र | 13/01/2089 | मंगल | 14/01/2107 | | 00/00/0000 |

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 8 वर्ष 5 मा 8 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| बुध - शुक्र | | बुध - सूर्य | | बुध - चंद्र | | बुध - मंगल | | बुध - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 08/06/2025 | | 08/04/2028 | | 12/02/2029 | | 15/07/2030 | | 12/07/2031 | |
| 08/04/2028 | | 12/02/2029 | | 15/07/2030 | | 12/07/2031 | | 28/01/2034 | |
| शुक्र | 27/11/2025 | सूर्य | 23/04/2028 | चंद्र | 27/03/2029 | मंगल | 05/08/2030 | राहु | 29/11/2031 |
| सूर्य | 18/01/2026 | चंद्र | 19/05/2028 | मंगल | 27/04/2029 | राहु | 28/09/2030 | गुरु | 01/04/2032 |
| चंद्र | 14/04/2026 | मंगल | 06/06/2028 | राहु | 13/07/2029 | गुरु | 15/11/2030 | शनि | 26/08/2032 |
| मंगल | 14/06/2026 | राहु | 23/07/2028 | गुरु | 20/09/2029 | शनि | 12/01/2031 | बुध | 05/01/2033 |
| राहु | 16/11/2026 | गुरु | 02/09/2028 | शनि | 11/12/2029 | बुध | 04/03/2031 | केतु | 01/03/2033 |
| गुरु | 03/04/2027 | शनि | 21/10/2028 | बुध | 22/02/2030 | केतु | 25/03/2031 | शुक्र | 03/08/2033 |
| शनि | 14/09/2027 | बुध | 04/12/2028 | केतु | 25/03/2030 | शुक्र | 25/05/2031 | सूर्य | 18/09/2033 |
| बुध | 07/02/2028 | केतु | 22/12/2028 | शुक्र | 19/06/2030 | सूर्य | 12/06/2031 | चंद्र | 05/12/2033 |
| केतु | 08/04/2028 | शुक्र | 12/02/2029 | सूर्य | 15/07/2030 | चंद्र | 12/07/2031 | मंगल | 28/01/2034 |

| बुध - गुरु | | बुध - शनि | | केतु - केतु | | केतु - शुक्र | | केतु - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28/01/2034 | | 05/05/2036 | | 13/01/2039 | | 11/06/2039 | | 11/08/2040 | |
| 05/05/2036 | | 13/01/2039 | | 11/06/2039 | | 11/08/2040 | | 16/12/2040 | |
| गुरु | 19/05/2034 | शनि | 08/10/2036 | केतु | 22/01/2039 | शुक्र | 21/08/2039 | सूर्य | 17/08/2040 |
| शनि | 27/09/2034 | बुध | 24/02/2037 | शुक्र | 16/02/2039 | सूर्य | 12/09/2039 | चंद्र | 28/08/2040 |
| बुध | 22/01/2035 | केतु | 22/04/2037 | सूर्य | 23/02/2039 | चंद्र | 17/10/2039 | मंगल | 04/09/2040 |
| केतु | 11/03/2035 | शुक्र | 03/10/2037 | चंद्र | 08/03/2039 | मंगल | 11/11/2039 | राहु | 23/09/2040 |
| शुक्र | 27/07/2035 | सूर्य | 21/11/2037 | मंगल | 16/03/2039 | राहु | 14/01/2040 | गुरु | 10/10/2040 |
| सूर्य | 07/09/2035 | चंद्र | 11/02/2038 | राहु | 08/04/2039 | गुरु | 11/03/2040 | शनि | 31/10/2040 |
| चंद्र | 15/11/2035 | मंगल | 10/04/2038 | गुरु | 28/04/2039 | शनि | 17/05/2040 | बुध | 18/11/2040 |
| मंगल | 02/01/2036 | राहु | 04/09/2038 | शनि | 21/05/2039 | बुध | 17/07/2040 | केतु | 25/11/2040 |
| राहु | 05/05/2036 | गुरु | 13/01/2039 | बुध | 11/06/2039 | केतु | 11/08/2040 | शुक्र | 16/12/2040 |

| केतु - चंद्र | | केतु - मंगल | | केतु - राहु | | केतु - गुरु | | केतु - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16/12/2040 | | 17/07/2041 | | 14/12/2041 | | 01/01/2043 | | 08/12/2043 | |
| 17/07/2041 | | 14/12/2041 | | 01/01/2043 | | 08/12/2043 | | 16/01/2045 | |
| चंद्र | 03/01/2041 | मंगल | 26/07/2041 | राहु | 09/02/2042 | गुरु | 16/02/2043 | शनि | 10/02/2044 |
| मंगल | 16/01/2041 | राहु | 18/08/2041 | गुरु | 01/04/2042 | शनि | 11/04/2043 | बुध | 07/04/2044 |
| राहु | 17/02/2041 | गुरु | 06/09/2041 | शनि | 01/06/2042 | बुध | 29/05/2043 | केतु | 01/05/2044 |
| गुरु | 17/03/2041 | शनि | 30/09/2041 | बुध | 25/07/2042 | केतु | 18/06/2043 | शुक्र | 08/07/2044 |
| शनि | 20/04/2041 | बुध | 21/10/2041 | केतु | 17/08/2042 | शुक्र | 14/08/2043 | सूर्य | 28/07/2044 |
| बुध | 20/05/2041 | केतु | 30/10/2041 | शुक्र | 20/10/2042 | सूर्य | 31/08/2043 | चंद्र | 31/08/2044 |
| केतु | 01/06/2041 | शुक्र | 24/11/2041 | सूर्य | 08/11/2042 | चंद्र | 28/09/2043 | मंगल | 23/09/2044 |
| शुक्र | 07/07/2041 | सूर्य | 01/12/2041 | चंद्र | 10/12/2042 | मंगल | 18/10/2043 | राहु | 23/11/2044 |
| सूर्य | 17/07/2041 | चंद्र | 14/12/2041 | मंगल | 01/01/2043 | राहु | 08/12/2043 | गुरु | 16/01/2045 |

**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 5 |
| भाग्यांक | 9 |
| मित्र अंक | 3, 5, 9 |
| शत्रु अंक | 2, 4, 8 |
| शुभ वर्ष | 23,32,41,50,59 |
| शुभ दिन | मंगल, रवि, गुरु |
| शुभ ग्रह | मंगल, सूर्य, गुरु |
| मित्र राशि | वृष, तुला |
| मित्र लग्न | वृश्चिक, मेष, मिथुन |
| अनुकूल देवता | कुबेर |
| शुभ रत्न | माणिक्य |
| शुभ उपरत्न | लाल हकीक, लाल तुर्मली |
| भाग्य रत्न | मूंगा |
| शुभ धातु | ताम्र |
| शुभ रंग | नारंगी |
| शुभ दिशा | पूर्व |
| शुभ समय | सूर्योदय |
| दान पदार्थ | मूंगा, केसर, रक्तचन्दन |
| दान अन्न | गेहुँ |
| दान द्रव्य | घी |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| माणिक्य | सूर्य | 100% | स्वास्थ्य |
| मूंगा | मंगल | 83% | धनार्जन, भाग्योदय, सुख |
| पन्ना | बुध | 81% | स्वास्थ्य, धनार्जन, धन |
| लहसुनिया | केतु | 73% | भाग्योदय, धनार्जन |
| हीरा | शुक्र | 62% | धन, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम |
| गोमेद | राहु | 58% | पराक्रम, धन |
| पुखराज | गुरु | 55% | पराक्रम, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव |
| मोती | चंद्र | 31% | दाम्पत्य कष्ट, व्यय |
| नीलम | शनि | 7% | दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग |

रत्न की शुभता

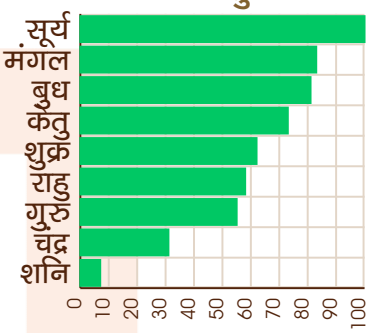


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | 13/01/2003 | 100% | 44% | 89% | 69% | 67% | 50% | 7% | 58% | 73% |
| शनि | 13/01/2022 | 89% | 6% | 70% | 88% | 55% | 69% | 32% | 64% | 61% |
| बुध | 13/01/2039 | 100% | 6% | 83% | 94% | 55% | 69% | 7% | 58% | 73% |
| केतु | 13/01/2046 | 89% | 6% | 89% | 81% | 55% | 69% | 0% | 41% | 86% |
| शुक्र | 13/01/2066 | 89% | 6% | 83% | 88% | 55% | 75% | 19% | 64% | 80% |
| सूर्य | 14/01/2072 | 100% | 44% | 89% | 81% | 61% | 50% | 0% | 41% | 61% |
| चंद्र | 13/01/2082 | 100% | 53% | 83% | 88% | 55% | 62% | 7% | 41% | 61% |
| मंगल | 13/01/2089 | 100% | 44% | 95% | 69% | 61% | 62% | 7% | 41% | 80% |
| राहु | 14/01/2107 | 89% | 6% | 70% | 81% | 55% | 69% | 19% | 70% | 61% |

**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 23/08/1994-02/06/1995 | 10/08/1995-16/02/1996 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 02/06/1995-10/08/1995 | 16/02/1996-17/04/1998 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 07/06/2000-23/07/2002 | 08/01/2003-07/04/2003 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 10/09/2009-15/11/2011 | 16/05/2012-04/08/2012 | ---------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 22/10/2038-05/04/2039 | 13/07/2039-28/01/2041 | 06/02/2041-26/09/2041 |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ---------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 30/08/2068-04/11/2070 | ---------- | ---------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 15/01/2079-12/04/2081 | 03/08/2081-07/01/2082 | ---------- |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | दम्पति |
| साढेसाती तृतीय ढैया | अशुभ | दुर्घटना से बचाव |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | शुभ | व्यावसायिक उन्नति |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | सम | धन |
| साढेसाती प्रथम ढैया | शुभ | शत्रु व रोग मुक्ति |

**Astro Rajkumar Pandey**
Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi
+91 8076-099-404
astro.rajkumarpandey@gmail.com

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

# मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**
**स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

**********

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है। यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जिससे धनऐश्वर्य से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। जीवन में जमीन जायदाद से भी आपको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से नित्य लाभ होता रहेगा तथा इसके क्रय विक्रय से भी आप प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी। सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही किसी विशिष्ट सम्मान भी आपको प्राप्ति हो सकती है। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप अपना जीवन यापन करेंगी ।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदाकदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद या तनाव भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्प ही रहेगा। वाणी से भी आप यदा कदा कठोरता का प्रदर्शन करेंगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में भी न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से आप युक्त रहेगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग भी सामान्य ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी समय समय पर लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकद्दमें या चुनाव आदि में भी आपको सफलता प्राप्त होती रहेगी। लेकिन शरीर में यदा कदा गर्मी या पित आदि से कोई परेशानी हो सकती है। परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही मामा आदि से भी सुख सहयोग की न्यूनता रहेगी परन्तु आपका सामान्य जीवन सुखी रहेगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों को आधुनिक सुख सुविधा प्रदान करने के लिए तत्पर रहेगी एवं इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। साथ ही पारिवारिक जनों से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा सभी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

# कालसर्प योग

**अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।**
**योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।**

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

**ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।**
**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- नवम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र, मंगल, गुरु और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ

आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# ग्रह फल

## सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

## चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी

अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

## मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

## बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

## गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

## शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

## शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

## राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

## केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मेष राशि में केतु  हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- बुध
## ( 13/01/2022 - 13/01/2039 )

बुध की महादशा 13/01/2022 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 13/01/2039 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरू के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

## अंर्तदशा :– बुध – शुक्र
## ( 08/06/2025 - 08/04/2028 )

आपके लिए बुध की महादशा 13/01/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 08/06/2025 को प्रारंभ होकर 08/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपका घरेलू जीवन सुखी रहेगा। भोग-विलास के साधन उपलब्ध होंगे। विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। मृदुवाणी के लिए प्रशंसा होगी। कला और साहित्य में रुचि होगी। प्रसिद्ध और धनी बनेंगे। रिश्तेदार सहायता करेंगे। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। वसीयत आदि से धनलाभ हो सकता है। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से धनागम हो सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी को साझेदार या विरासत से धनलाभ हो सकता है। आपके पिता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। माता सफल, भाग्यशाली और लोकप्रिय होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, उच्च पद, सुखद यात्राएं, वाहन का संकेत है।

आपकी संतान लोकप्रिय, सफल, प्रसन्न होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो आय अच्छी होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता धनी बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है, अचानक लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए श्वेत वस्त्र, चावल और दही का दान करें।

## अंर्तदशा :– बुध – सूर्य
## ( 08/04/2028 - 12/02/2029 )

आपके लिए बुध की महादशा 13/01/2022 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/04/2028 को प्रारंभ होकर 12/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। आपका स्वास्थ्य और ऊर्जा उत्तम रहेंगे। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। प्रबंधन शक्ति उत्तम होगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है, इससे निबटने के लिए कूटनीति और धैर्य की आवश्यकता पड़ेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। व्यापार में लाभ होगा। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, व्यापार में लाभ होगा, यात्रा और प्रोन्नति का योग

है। आपके पिता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, प्रारंभ किये कार्य पूर्ण होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता को प्रसिद्धि, प्रोन्नति, कार्यों में सफलता मिलेंगी; धन का लाभ होगा। आपके भाई-बहनों को उच्चपद, सम्मान, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता का संकेत है।

आपकी संतान का भाग्य उत्तम रहेगा, सफलता और समृद्धि मिलेंगी, विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल सकता है, यात्रा हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा, भाग्य चमकेगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से विवाद हो सकता है। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्त संबंधी मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

## अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
## ( 12/02/2029 - 15/07/2030 )

आपकी बुध की महादशा 13/01/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 12/02/2029 को प्रारंभ होकर 15/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन सुखी होगा। मानसिक और भावनात्मक रूप से खुश रहेंगे। यात्रा से खुशियां मिलेंगी। व्यापार में, खास तौर पर तरल पदार्थ, रसायन और औषधि आदि के उद्यम में लाभ होगा। महिलाओं से संबंधित कार्य भी लाभदायक होगा। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। बहुत से मित्र होंगे। समाज में सफलता और लोकप्रियता मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी को समृद्धि, सफलता और लोकप्रियता मिलेंगी। आपके पिता धन का संचय करेंगे, लक्ष्य प्राप्त करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, वाहन सुख होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, लाभकारी निवेश, संतानसुख या संतान का जन्म, दान में रुचि, सौभाग्य, खुशी और पिता से प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो संचारमाध्यम से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनागम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पेट की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को वस्त्र दान में दें।

## अंर्तदशा :- बुध - मंगल
## ( 15/07/2030 - 12/07/2031 )

आपके लिए बुध की महादशा 13/01/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 15/07/2030 को प्रारंभ होकर 12/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। धनागम होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विभिन्न वस्तुएं क्रय करेंगे। आप धनी, सफल और प्रभावशाली बनेंगे। बहुत से मित्र होंगे जिनसे सहायता मिलेगी। संतान सुखकारी रहेगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। तकनीकी शिक्षा में सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। किराये से अच्छी आय होगी। मुकदमे में जीत होगी। कटु वचनों के प्रयोग से बचें।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे; आय अच्छी होगी। आपके पिता धनी बनेंगे, सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

माता को अचानक धनलाभ हो सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, आकांक्षाओं की पूर्ति, ज्ञान-विज्ञान से संबंधित कार्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उत्तम स्वास्थ्य, शिक्षा, धन और आत्म-विश्वास का संकेत है।

अपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे सेवारत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में खुशी का वातावरण रहेगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।